Spinoza – 'Parallelism'

स्पिनोजा का 'समान्तरवाद'

स्पिनोजा के दर्शन में ईश्वर ही परमतत्व है। चित् और अचित् दोनों इसी के गुण हैं। चेतन और अचेतन ईश्वर से पृथक नहीं है। डेकार्ट ने इन्हें परस्पर-विरोधी सापेक्ष द्रव्य माना था किन्तु स्पिनोजा इन्हें द्रव्य न मानकर गुण मानते हैं और इन्हें परस्पर-विरोधी न मानकर परस्पर भिन्न मानते हैं। स्पिनोजा जड़ और चेतन में कार्य-कारण संबंध नहीं मानकर इन्हें समांतर मानते हैं। दोनों ही परमसत्ता (ईश्वर) के कार्य हैं। एक ही ईश्वर जड़ कार्यों में जड़ात्मक और चेतन वस्तुओं में चेतन या आध्यात्मिक प्रतीत होता है। यहाँ दोनो समांतर हैं। इसीलिए इनके सिद्धान्त को 'समान्तरवाद' (Parallelism) कहा गया है।

स्पिनोज़ा ने डेकार्ट के द्रव्यात्मक द्वैत का निराकरण करके उसे गुणात्मक द्वैत में परिणत कर दिया। उनके अनुसार मानसिक और भौतिक घटनाएँ एक ही द्रव्य के दो पहलू हैं। विचार और विस्तार दोनों एक ही द्रव्य के दो समानांतर गुण हैं। मनुष्य विकारों का एक पुँज है। मानसिक और भौतिक गुणों से युक्त होते हुए भी मनुष्य स्वरूपतः भौतिक नहीं है। मनुष्य ईश्वर के गुणों (विचार एवं विस्तार) अथवा उनके माध्यम से अभिव्यक्त विकारों की संरचना है। प्रश्न उठता है कि एक ही व्यक्ति में दो परस्पर विरोधी गुणों के विकार कैसे रहते हैं? यद्यपि स्पिनोजा ने इसका स्पष्ट विवेचन नहीं किया है तथापि इसकी व्याख्या करने के लिए उनके दर्शन में विचार और विस्तार दोनों को एक-दूसरे के समानान्तर माना गया है। इसी प्रकार मानसिक और शारीरिक क्रियाएँ एक-दूसरे के समानान्तर रूप में घटित होती हैं।

स्पिनोजा मन और शरीर के संबंध को लेकर डेकार्ट के अंतर्क्रियावाद के स्थान पर समांतर-वाद की स्थापना करते हैं। चूँकि चेतन और अचेतन दोनों को डेकार्ट ने एक-दूसरे से स्वतंत्र द्रव्य मान लिया था अतः उनमें अन्तर्क्रिया का प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता है। वे एक-दूसरे के विरुद्ध क्रिया-प्रतिक्रिया क्यों करेंगे? डेकार्ट समस्या के इस पक्ष की व्याख्या नहीं कर पाते। इसी कठिनाई के कारण ही स्पिनोजा ने द्रव्यों के द्वैतवाद का निराकरण करके दो समानान्तर गुणों के द्वैत को स्वीकार किया। इस प्रकार स्पिनोजा के दर्शन में विचार और विस्तार दो परस्पर विरोधी द्रव्य नहीं हैं। इन दोनों का अधिष्ठान एक पूर्ण द्रव्य है, जिसके स्वभाव से ये दोनों गुण समानान्तर रूप से प्रकाशित होते हैं। विचार और विस्तार दोनों का आधार एक ही द्रव्य को मान लेने के कारण स्पिनोजा उनके विरोधी स्वभाव में सामञ्जस्य स्थापित कर देते हैं।

आत्मा और शरीर में कोई संयोग भी नहीं हो सकता है क्योंकि वे स्वभावतः एक ही द्रव्य से संबंधित होने के कारण वे एक-दूसरे के सहयोगी हैं। आत्मा शरीर का विचार है और शरीर आत्मा का विस्तार है। जो विचार हमारे मन में उठता है, उसके समानान्तर ही हमारे शरीर में कोई क्रिया, गति अथवा घटना घटित होती है तो उसके ठीक समानान्तर ही मन में उस क्रिया या घटना का विचार उत्पन्न हो जाता है। डेकार्ट और उसके अनुयायियों ने भ्रमवश इसे ही एक दूसरे के प्रति क्रिया-प्रतिक्रिया समझने की भूल की। वस्तुतः मनुष्य का मन ईश्वर की अनंत बुद्धि का एक अंश है। इस प्रकार मन और शरीर क्रमशः विचार और विस्तार के विकार हैं। मनुष्य एक ही द्रव्य के इन समानान्तर गुणों से उत्पन्न विकारों की रचना है।

इस प्रकार स्पिनोजा के समान्तरवाद (Parallelism) का निहितार्थ यह है कि बिना विस्तार के चैतन्य की कल्पना नहीं की जा सकती तथा इसी प्रकार बिना चैतन्य के विस्तार की कल्पना नहीं की जा सकती। विचार ज्ञाता है और विस्तार ज्ञेय है। ज्ञाता और ज्ञेय दोनों सापेक्ष हैं। दोनों साथ-साथ रहते हैं। ज्ञेय उतना ही चेतन है जितना ज्ञाता विस्तृत है किन्तु फिर भी दोनों एक नहीं हैं। ज्ञाता और ज्ञेय न तो बिल्कुल विरुद्ध हैं और न सर्वथा समान ही हैं। उनके बीच भेदाभेद संबंध पाया जाता है।